कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (11) खण्ड -{21}

समग्र मुरलियों पर आधारित अधोलिखित प्रश्नों के सबसे उपयुक्त एक ही उत्तर का चयन करें.....

प्रश्न 1- यहाँ पहली बात कौन सी है ?

A- विष (विकार) छोड़ने की।
B- देह-अभिमान छोड़ने की।
C- एक दो को दुःख देने की।
D- उपरोक्त सभी

प्रश्न 2- अब तुम जानते हो - हम आत्मा हैं, इस पुराने शरीर से क्या नहीं रखना है, यह तो विकारी संबंध हैं ना ?

A- लगाव
B- अटैचमेंट

C- मोह

D- लोभ

प्रश्न 3- तुम सब ब्राह्मण कुल की पालना करते हो, फिर किस की पालना करेंगें?

A- ईश्वरीय कुल की

B- विष्णु कुल की।

C- दैवी कुल की।

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न 4- निम्नलिखित में सही विकल्प नहीं है ?

A- किसी आत्मा के प्रति अगर व्यर्थ दृष्टि भी जाती है तो उस समय पवित्रता नहीं मानी जायेगी।

B- पवित्रता जहाँ होगी वहाँ निश्चय,सच्चाई-सफाई, ये सब आ जाता है।

C- कोई भी विकार जब आता है तो पहले कर्म में आता है।

D- व्यर्थ संकल्प क्रोध भी पैदा करता।

E- उपरोक्त सभी सही है।

प्रश्न सं 5- कौनसा वन्डरफुल खेल संगम पर ही चलता है ?

A- चटाबेटी का।

B- फारकती दिलाने का।

C- खेलपाल का।

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न सं 6- तुम्हें 100 परसेन्ट सर्वगुणों में सम्पन्न बनना है, दिल दर्पण में देखना है कि -

A- हम कहाँ तक पावन बने हैं ?

B- हम लक्ष्मी को वरने के लायक है ?

C- हमने कितने पाप किये और कितने पुण्य ?

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न सं 7- विष्णु का राज्य क्षीरसागर में है।अर्थात् ?

A- घी की नदी बहती है।

B- जमुना के कण्ठे पर है।

C- सब पावन ही पावन है।

D- सम्पन्नता से भरपूर है।

प्रश्न सं 8- तुम बच्चे ज्ञान डांस करते हो इसलिए क्या कहा जाता है ?

A- पाना था सो पा लिया ।

B- सच तो बिठो नच।

C- रास- विलास करना।

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न सं 9- सतयुग में देवतायें कभी यज्ञ आदि नहीं रचते। परन्तु यह यज्ञ है....

A- राजस्व अश्वमेध अविनाशी रुद्र ज्ञान यज्ञ।

B- राजस्व अविनाशी रुद्र अश्वमेथ ज्ञान यज्ञ।

C- अविनाशी राजस्व अश्वमेध रुद्र ज्ञान यज्ञ।

D- अविनाशी रूद्र राजस्व अश्वमेध ज्ञान यज्ञ।

प्रश्न सं 10- लौकिक बाप होते भी आत्मा पारलौकिक बाप को याद करती है,क्यों ?

A- क्योंकि दुःखी है।

B- क्योंकि आधा कल्प की आदत हो गई है।

C- क्योंकि वह सुख का सागर है।

D- उपरोक्त सभी।

प्रश्न सं 11- ..... वह है जो स्व -परिवर्तन से विश्व परिवर्तन करने के निमित्त बनते हैं ?

A- विश्व कल्याणकारी

B- परोपकारी

C- विश्व सेवाधारी

D- स्व परिवर्तक

प्रश्न सं 12- पूज्य बनने का पुरुषार्थ क्या है?

A- विश्व को पावन बनाने की सेवा में मददगार बनना।

B- पूज्य और पुजारी के रहस्य को समझना।

C- लक्ष्मी-नारायण वा देवी- देवता के रूप में पूजे जाना।

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न सं 13- माया की.....से बचने के लिए बाप की शरण में आ जाओ ईश्वर की शरण में आने से 21 जन्म के लिए माया के बंधन से छूट जायेंगे

A- सजा

B- चालाकी

C- पीड़ा

D- दुःख

प्रश्न सं 14- हर वर्ष राखी बंधवाते हैं क्योंकि.....

A- वादा तोड़ देते हैं।

B- पवित्र नहीं रहते

C- हर वर्ष रावण को जलाते हैं।

D- उपरोक्त सभी सही है।

प्रश्न सं 15- इनमें से कौन सा सही नहीं है ?

A- कांटे को कली, कली को फिर फूल बनाना है।

B- माया का तूफान आने से कलियां वा फूल झड़ जाते हैं।

C- सतयुग-त्रेता को योगेश्वर का राज्य कहा जाता है।

D- श्रीकृष्ण को योगेश्वर नहीं कह सकते।

E- उपरोक्त सभी सही है।

प्रश्न सं 16- पवित्रता आप ब्राह्मणों का सबसे बड़े से बड़ा..... है ?

A- व्रत

B- प्रॉपर्टी

C- श्रृंगार

D- गुण

भाग (11) खण्ड {21} के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर सं 1. A- विष या विकार छोड़ने की।

भागवत में भी मशहूर है - अमृत पीते-पीते ट्रेटर बन फिर सताते हैं। बाप को कितना ख्याल रहता है - यह फलाना कच्चा है, कोई भी समय ट्रेटर बन नुकसान कर सकता है। बरोबर देखते हैं ट्रेटर बन नुकसान करने लग पड़ते हैं फिर कितनी अबलाओं पर अत्याचार होते हैं। और सतसंगों में अत्याचार होते हैं क्या? *यहाँ पहली बात है विष (विकार) छोड़ने की*। विष छोड़ते नहीं हैं।कहते भी हैं फलाना स्वर्ग पधारा।

उत्तर सं 2. C- मोह

कोई-कोई बिगर देखे सगाई कर लेते हैं फिर जब शक्ल देखते हैं तो कहते हैं हमको ऐसी काली नहीं चाहिए। फिर झगड़ा हो जाता है - हम पैसे को क्या करें, हमें तो सुन्दर

चाहिए। *अब तुम जानते हो - हम आत्मा हैं। इस पुराने शरीर से मोह नहीं रखना है। यह तो विकारी संबंध हैं ना।* दुनियावी बातों से अपनी बात न्यारी है। अभी तुम्हारी काली आत्मा की सगाई हुई है गोरे मुसाफिर से।

उत्तर सं 3. C- दैवी कुल की।

अब जड़ चित्र तो कुछ कर नहीं सकते, न वह समझते हैं परन्तु यह है भक्ति। तुम जानते हो वह पास्ट हो गये हैं। जगत अम्बा की महिमा है। एक तो नहीं है, *तुम सब ब्राह्मण कुल की पालना करते हो, फिर दैवी कुल की पालना करेंगे।* तुम इस समय जैसे कि सारे जगत की पालना करते हो परन्तु कोई जानते नहीं।

उत्तर सं 4. C- कोई भी विकार जब आता है तो पहले कर्म में आता है।

*A और D संकल्प की पवित्रता का रहस्य सभी को प्रैक्टिकल में लाना चाहिए ना। वैसे देखा जाये तो पांचों ही विकार, चाहे काम हो, चाहे मोह हो, सबसे नम्बरवन है काम और लास्ट में है मोह। लेकिन कोई भी विकार जब आता है तो पहले संकल्प में आता है। *व्यर्थ संकल्प क्रोध भी पैदा

करता है* तो काम अर्थात् व्यर्थ दृष्टि, *किसी आत्मा के प्रति अगर व्यर्थ दृष्टि भी जाती है तो उस समय पवित्रता नहीं मानी जायेगी।*

B. (पवित्रता, अन्तर्मुखता, निश्चयबुद्धि, सच्चाई-सफाई)। वास्तव में फाउण्डेशन है - पवित्रता। लेकिन पवित्रता की परिभाषा बहुत गुह्य है। *पवित्रता जहाँ होगी वहाँ निश्चय, सच्चाई-सफाई, ये सब आ जाता है।*

अर्थात A,B,D अव्यक्त मुरली 07.11.1995 के अनुसार सही हैं, इसलिए C सही नहीं है।

उत्तर सं 5. B- फारकती दिलाने का।

फारकती दिलाने का। राम, रावण से फारकती दिलाते हैं। रावण फिर राम से फारकती दिला देते। यह बड़ा वन्डरफुल खेल है। बाप को भूलने से माया का गोला लग जाता है इसीलिये बाप शिक्षा देते हैं - बच्चे, अपने स्वधर्म में टिको, देह सहित देह के सब धर्मों को भूलते जाओ। याद करने का खूब पुरुषार्थ करते रहो। देही-अभिमानी बनो।

उत्तर सं 6. A- हम कहाँ तक पावन बने हैं?

*तुम्हें 100 परसेन्ट सर्वगुणों में सम्पन्न बनना है, दिल

दर्पण में देखना है कि हम कहाँ तक पावन बने हैं* पतितों को पावन बनाने के लिए बाप श्रीमत देते हैं। यह श्रीमत देने वाला कौन है, उनको भी समझना चाहिए। वही बोलते हैं आत्माओं को। आत्मा जानती है मैंने इस शरीर से अच्छे कर्म किये हैं या बुरे कर्म किये हैं। बाबा तुम बच्चों को समझ देते हैं।

उत्तर सं 7. A- घी की नदी बहती है।

बाप से योग तोड़ नहीं देना है। सबका खिवैया वह बाप है। विषय वैतरणी की बड़ी खाड़ी है। उसे तुम योगबल से पार करते हो। विषय सागर से पार होकर तुम क्षीरसागर में चले जायेंगे। *विष्णु का राज्य क्षीरसागर में है अर्थात् घी की नदी बहती है।* यहाँ तो घासलेट की, रक्त की नदियां बहती हैं।

उत्तर सं 8. B- सच तो बिठो नच।

यहाँ *तुम बच्चे ज्ञान डांस करते हो इसलिए कहा जाता है सच तो बिठो नच,* (सच्चे हो तो खुशी में नाचते रहो) फिर तुम वहाँ जाकर रास-विलास करेंगे। मीरा भी ध्यान में रास आदि करती थी। परन्तु उसने भक्ति की।

उत्तर सं 9. A- राजस्व अश्वमेध अविनाशी रुद्र ज्ञान यज्ञ।

जब तक ब्राह्मण न बने तब तक शिवबाबा से वर्सा मिल

न सके। शूद्र वर्सा ले न सकें। यह यज्ञ है ना। इसमें ब्राह्मण जरूर चाहिये। यज्ञ हमेशा ब्राह्मणों का ही होता है। शिव को रुद्र भी कहा जाता है। तो यह है रुद्र ज्ञान यज्ञ। रुद्र शिवबाबा ने यह ज्ञान यज्ञ रचा हुआ है। भक्ति पूरी होती है तो यज्ञ रचा जाता है। मनुष्य यज्ञ रचते हैं भक्ति मार्ग में। सतयुग में देवतायें कभी यज्ञ आदि नहीं रचते। परन्तु यह है *राजस्व अश्वमेध अविनाशी रुद्र ज्ञान यज्ञ।* इस नाम से शास्त्रों में भी गायन है।

उत्तर सं 10. A- क्योंकि दु:खी है।

कोई भी मिलते हैं तो उनको यह बताना चाहिए कि दो बाप हैं - लौकिक और पारलौकिक। *दु:ख में पारलौकिक बाप को ही याद करते हैं।* वह बाप अब आया हुआ है। मोस्ट बील्वेड शिवबाबा है। श्रीकृष्ण भी सबका मोस्ट बील्वेड है। परन्तु शिव-बाबा है निराकार और श्रीकृष्ण है साकार। श्रीकृष्ण को सबका बाप नहीं कहेंगे। वह है विश्व का मालिक। उनको भी बनाने वाला शिव है।

उत्तर सं 11. B- परोपकारी

परोपकारी वह है जो स्व-परिवर्तन से विश्व परिवर्तन

करने के निमित्त बनते हैं। परोपकारी की परिभाषा सहज भी है और अति गुह्य भी है।

1. परोपकारी अर्थात् हर समय बाप समान हर आत्मा के गुणमूर्त्त को देखते। 2. परोपकारी किसी की भी कमज़ोरी वा अवगुण को देखते अपनी शुभ भावना से सहयोग की कामना से अवगुण को देखते उस आत्मा को भी गुणवान बनाने की शक्ति का दान देंगे। 3. परोपकारी अर्थात् सदा बाप समान स्वयं के खज़ानों को सर्व आत्माओं के प्रति देने वाले दाता रूप होंगे। 4. परोपकारी सदा स्वयं को खज़ानों से सम्पन्न बेगमपुर के बादशाह अनुभव करेंगे। बेगमपुर अर्थात् जहाँ कोई गम नहीं। संकल्प में भी गम के संस्कार अनुभव न हों।

उत्तर 4. 12- विश्व को पावन बनाने की सेवा में मददगार बनना।

पूज्य बनने के लिये *विश्व को पावन बनाने की सेवा में मददगार बनो।* जो जीव की आत्मायें बाप को मदद करती हैं उनकी बाप के साथ-साथ पूजा होती है। तुम बच्चे शिवबाबा के साथ सालिग्राम रूप में भी पूजे जाते हो, तो फिर साकार में

लक्ष्मी-नारायण वा देवी-देवता के रूप में भी पूजे जाते हो। तुमने पूज्य और पुजारी के रहस्य को भी समझा है।

उत्तर सं 13 C - *पीड़ा*

"माया की पीड़ा से बचने के लिए बाप की शरण में आ जाओ , ईश्वर की शरण में आने से 21 जन्म के लिए माया के बंधन से छूट जायेंगे " आधाकल्प माया से पीड़ित हो अभी तुमने आकर शरण ली है परमपिता परमात्मा की। मम्मा ने भी ली है।इस बाबा ने भी शरण ली है शिवबाबा की।

उत्तर सं 14 B - *पवित्र नहीं रहते*

कई तो अच्छी रीति समझ लेते हैं, कई नहीं समझते हैं, तो समझा जाता है - यह पावन दुनिया में चलने लायक नहीं हैं इसलिए श्रीमत पर नहीं चलते हैं। यह है ही आसुरी रावण सम्प्रदाय। रावण को हर वर्ष जलाते हैं ना। यह निशानी है। *हर वर्ष राखी भी बंधवाते हैं क्योंकि पवित्र नहीं रहते।* राखी बंधवाते हैं फिर अपवित्र बन पड़ते हैं इसलिए वर्ष-वर्ष राखी बंधवाते हैं। राखी है पवित्रता की निशानी। विकारियों को राखी भेज देते हैं कि प्रतिज्ञा करो हम पवित्र रहेंगे। पवित्र बनने से 21 जन्म राज्य-भाग्य पायेंगे।

उत्तर सं 15 D - *श्रीकृष्ण को योगेश्वर नहीं कह सकते।* अब फिर माया पर जीत पानी है। माया जीते जगत जीत। रावण से हार खाई तो डेविल बने, अब डीटी (देवता) बनना है। *कांटे को कली, कली को फिर फूल बनाना है। माया का तूफान आने से कलियां वा फूल झड़ जाते हैं।* मात-पिता का बनकर फिर फ़ारकती दे देते हैं।
यह भारत बिल्कुल ही पतित, भोगी हो गया है। योगी नहीं कहेंगे। *सतयुग-त्रेता को कहा जाता है योगेश्वर का राज्य। श्रीकृष्ण को योगेश्वर कहते हैं।* ईश्वर के साथ योग लगाकर पद पाना है। सो तुम पा रहे हो। बाप कितना अच्छी रीति समझाते हैं।

उत्तर सं 16 C - *श्रृंगार*
पवित्रता आप ब्राह्मणों का सबसे बड़े से बड़ा श्रृंगार है, इसीलिए आपके चित्रों का कितना श्रृंगार करते हैं। यह पवित्रता का यादगार श्रृंगार है। पवित्रता, सम्पूर्ण पवित्रता, काम चलाऊ पवित्रता नहीं। सम्पूर्ण पवित्रता आप ब्राह्मण जीवन की सबसे बड़े ते बड़ी प्रापर्टी है, रॉयल्टी है, पर्सनाल्टी

है। इसीलिए भक्त लोग भी एक दिन पवित्रता का व्रत रखते हैं।

कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (11) खण्ड -{22}

प्रश्न सं 1- प्रतिज्ञा कमजोर होने का एक ही कारण है, एक ही शब्द है। सोचो, वह एक शब्द क्या है?

A- अभिमान

B- मैं

C- मेरापन

D- देहाभिमान

प्रश्न सं 2- विकर्म और विक्रमाजीत संवत् के विषय में इनमें से कौन सा सही नहीं है?

A- बस, बाप को याद करते रहो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो जायेंगे। तुम विकर्माजीत राजा बन जायेंगे।

B- विकर्माजीत राजा का संवत एक से शुरू हुआ फिर विक्रम संवत 2500 वर्ष बाद शुरू होता है।

C- विकर्माजीत और विक्रम भारतवासियों के दो संवत हैं।

D- विकर्माजीत का संवत सभी जानते हैं, विक्रम का संवत भूल गये हैं।

E- उपरोक्त सभी सही है।

प्रश्न सं 3- शिक्षक डायरेक्ट परम आत्मा है! क्या शिक्षा दी?आपको क्या बना दिया?

A- त्रिनेत्री

B- त्रिकालदर्शी

C- त्रिलोकीनाथ

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न सं 4- इनमें से कौनसा सही है ?

A- बुद्धि कहती है हम तो बाबा के साथ सुखधाम-शान्तिधाम जायें।

B- मुक्तिधाम में तो सदैव के लिए बैठना नहीं है।

C- पुराने बच्चों को मुक्तिधाम में जास्ती रहने कारण मुक्ति-धाम ही जास्ती याद पड़ेगा।

D- उपरोक्त सभी सही है।

प्रश्न सं 5- इनमें से सही नहीं है-

A- सर्विस का शौक होगा तो विनाश के समय भी किसको ज्ञान देंगे।

B- पारलौकिक बाप का बनने से स्वर्ग का मालिक बनेंगे।

C- उठते-बैठते-चलते यह बुद्धि में रखना है - मैं आत्मा हूँ।

D- बाप आये ही हैं नर्क का विनाश कर स्वर्ग की स्थापना करने।

E- उपरोक्त सभी सही है।

प्रश्न सं 6- ब्राह्मण जीवन की पर्सनैलिटी रॉयल्टी कौन सी है?

A- शान्ति

B- श्रृंगार

C- प्युरिटी

D- प्रेम

प्रश्न सं 7- बाप आये..... इसलिए इस नर्क से दिल न लगाओ, इनको भूलते जाओ। उचित वाक्य से रिक्त स्थान की पूर्ति करो ?

A- तुम्हें दुःखो से लिबरेट करने

B- तुम्हारे लिए स्वर्ग की नई दुनिया स्थापन करने

C- तुम्हें मुक्ति - जीवनमुक्ति का रास्ता बताने

D- गाइड बन सबको साथ ले जाने

प्रश्न सं 8- इनमें से सही नहीं है-

A- निराकार बाप को अथवा आत्मा को नहीं देखा जा सकता।

B- बैकुण्ठ के गेट बाप आकर खोलते हैं।

C- आत्मा के बाप को कहा जाता है अलौकिक बाप।

D- बाप कहते है- रहम तो सब पर करुँगा। सब बच्चों को पापों से मुक्त करता हूँ।

E- उपरोक्त सभी सही है।

प्रश्न सं 9- एक हफ्ता बैठ समझें कि मनुष्य से देवता बनना है इसलिए बाप को कहा जाता है।

A- मुसाफिर

B- रत्नागर

C- सौदागर

D- जादूगर

प्रश्न सं 10- बाप फिर से कौनसे धर्म की सैपलिंग लगा रहे हैं ?

A- ब्राह्मण धर्म की

B- देवी-देवता धर्म की

C- क्षत्रिय धर्म की

D- तीनों

प्रश्न सं 11- इनमें से कौनसा सही नहीं है-

A- विनाश काल का समय है इसलिए देहधारियों से प्रीत जोड़ एक बाप से सच्ची प्रीत रखनी है।

B- इस पुराने घर से मोह नष्ट कर देना

C- ज्ञान की बुलबुल बन आप समान कांटों को फूल बनाने की सेवा करनी

D- याद की दौड़ लगानी है।

E- उपरोक्त सभी सही है।

प्रश्न सं 12- ब्रह्मा बाबा शिव बाप की विशेष पसन्दगी क्या है?

A- पवित्रता

B- निश्चयबुद्धि

C- सच्चाई-सफाई

D- समर्पण

प्रश्न सं 13- नई सृष्टि में फिर नया जमाना स्वर्ग का होगा, अभी तो .....का जमाना है।

A- पुरानी दुनिया

B- पाप

C- नर्क

D- रावण

प्रश्न सं 14- अविनाशी बाप को याद करते ही आये हैं क्योंकि-

A- रावण राज्य में दुःख ही दुःख है।

B- मौत सामने खड़ा है।

C- सब मनुष्य आत्मायें कब्रदाखिल है।

D- उपरोक्त सभी सही है।

प्रश्न सं 15- जो-जो आत्मायें पहले आती हैं, वह जीवनमुक्ति में हैं, पीछे फिर..... में आती हैं।

A- मुक्ति से जीवनमुक्ति में

B- जीवनमुक्ति से जीवनबन्ध में

C- निर्वाणधाम से सतयुग में

D- जीवन-मुक्ति से मुक्ति में

प्रश्न सं 16- मनुष्यों की कौन- सी चाहना एक बाप ही पूरी कर सकते हैं ?

A- शान्ति

B- सुख

C- पवित्रता

D- प्रेम

भाग (11) खण्ड {22} के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर सं 1 B - * `मैं'*

प्रतिज्ञा कमज़ोर होने का एक ही कारण है, एक ही शब्द है। सोचो, वह एक शब्द क्या है? *एक शब्द है - `मैं'।* अभिमान के रूप में भी `मैं' आता है और कमज़ोर करने में भी `मैं' आता है। मैंने जो कहा, मैंने जो किया, मैंने जो समझा, वही राइट है। वही होना चाहिए। यह अभिमान का `मैं'। मैं जब पूरा नहीं होता है तो फिर दिलशिकस्त में भी आता है, मैं कर नहीं सकता, चल नहीं सकता, बहुत मुश्किल है। एक

बॉडीकॉन्सेसनेस का `मैं' बदल जाए, `मैं' स्वमान भी याद दिलाता है और `मैं' देह-अभिमान में भी लाता है। मैं' दिलशिकस्त भी करता है और `मैं' दिलखुश भी करता है।

उत्तर सं 2 D - *विकर्माजीत का संवत सभी जानते हैं, विक्रम का संवत भूल गये हैं।*

बाप कहते हैं - सिर्फ मुझ बाप को याद करो। मैं आत्मा परमपिता परमात्मा का बच्चा हूँ। बस, *(A)* बाप को याद करते रहो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो जायेंगे। *(B)* तुम विकर्माजीत राजा बन जायेंगे। विकर्माजीत राजा का संवत एक से शुरू हुआ फिर विक्रम संवत 2500 वर्ष बाद शुरू होता है। *(C)* विकर्माजीत और विक्रम, भारतवासियों के दो संवत हैं। *(D) विक्रम का संवत सभी जानते हैं, विकर्माजीत का संवत भूल गये हैं।* यह है पढ़ाई।

उत्तर सं 3 D - *त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी, त्रिलोकीनाथ*

जब हमारा है तो नशा (फखुर) होना चाहिये ना? लेकिन कभी ऊंचा तो कभी मध्यम, कभी साधारण हो जाता है। सोचो,

हमारा बाप परम आत्मा है! और फिर शिक्षक डायरेक्ट परम आत्मा है! क्या शिक्षा दी? आपको क्या बना दिया? *त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी, त्रिलोकीनाथ।* ऐसी कोई पढ़ाई पढ़ता है! अभी तक ये डिग्री सुनी है? जज बैरिस्टर, डॉक्टर, इंजीनियर ये तो सब डिग्रीज देखी हैं लेकिन त्रिलोकीनाथ, त्रिकालदर्शी, त्रिनेत्री, नॉलेजफुल....ऐसी डिग्री देखी है? द्वापर से कलियुग तक किसको मिली है? आपको मिली थी?

उत्तर सं 4- B - *मुक्तिधाम में तो सदैव के लिए बैठना नहीं है।*

(A) यहाँ तुम बच्चे सम्मुख बैठे हो। तुम्हारा लौकिक सम्बन्ध कोई है नहीं। *बुद्धि कहती है हम तो बाबा के साथ मुक्तिधाम-शान्तिधाम जायें।* सवेरे उठ ऐसे-ऐसे बैठ विचार सागर मंथन करना चाहिए।

(B) दु:खधाम की गली से तो तुम जन्म-जन्मान्तर पास कर आये हो। अब बुद्धि कहती है मुक्ति-जीवनमुक्ति तरफ जायें। *मुक्तिधाम में तो सदैव के लिए बैठना नहीं है।* ऐसे

नहीं, हम पार्ट से छूट जायें, आयें ही नहीं। पार्ट से छूटना नहीं हो सकता।

(C) मुक्ति को तो याद करना पड़े ना। *पिछाड़ी वालों को मुक्तिधाम में जास्ती रहने कारण मुक्ति-धाम ही जास्ती याद पड़ेगा।* तुमको जीवनमुक्तिधाम याद पड़ता है। स्वर्ग में हम जल्दी जायें।

उत्तर सं 5- A - *सर्विस का शौक होगा तो _विनाश_ के समय भी किसको ज्ञान देंगे।*

(A) शिवबाबा बेहद का बाप है, वही वर्सा देंगे। *सर्विस का शौक होगा तो _मरने_ समय भी किसको ज्ञान देंगे।* ऐसे नहीं, हॉस्पिटल में पड़े रहें और मुख बन्द हो जाए। मुख से कुछ न कुछ निकलता रहे। कितनी अच्छी अवस्था होनी चाहिए।

(B) लौकिक सम्बन्ध से जीते जी मरना है। *पारलौकिक बाप का बनने से स्वर्ग का मालिक बनेंगे।* यहाँ तो नर्क के मालिक बनते हैं।

(C) *उठते-बैठते-चलते यह बुद्धि में रखना है - मैं आत्मा हूँ।* बाप की मत पर चलना है। शिवबाबा मत दे रहे हैं - अपने को आत्मा समझो।

(D) *बाप आये ही हैं नर्क का विनाश कर स्वर्ग की स्थापना करने।* हम आपको भी राय देते हैं, श्री श्री से मिली हुई श्रीमत हम आपको भी देते हैं। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम स्वर्ग के मालिक बनेंगे।

उत्तर सं 6- C - *प्युरिटी*

ब्राह्मण जीवन की पर्सनैलिटी कितनी बड़ी है! डायरेक्ट भगवान ने आपके ब्राह्मण जीवन में पर्सनैलिटी और रॉयल्टी भरी है। ब्राह्मण जीवन का चित्रकार कौन? स्वयं बाप। *ब्राह्मण जीवन की पर्सनैलिटी रॉयल्टी कौन सी है? प्युरिटी। प्युरिटी ही रॉयल्टी है।* है ना! ब्राह्मण आत्मायें सभी जो भी बैठे हो तो प्युरिटी की रॉयल्टी है ना!

उत्तर सं 7- B - *तुम्हारे लिए स्वर्ग की नई दुनिया स्थापन करने*

“बाप आये हैं *तुम्हारे लिए स्वर्ग की नई दुनिया स्थापन करने*, इसलिए इस नर्क से दिल न लगाओ, इनको भूलते जाओ" बाप कहते हैं - लाडले बच्चे, मैं तुम्हारे लिए स्वर्ग स्थापन कर रहा हूँ, तुम फिर नर्क से दिल क्यों लगाते हो? अब नर्क को भूल जाओ। मुझ बाप और स्वर्ग को याद करो, पुरानी दुनिया को भूलते जाओ। यह है बेहद का संन्यास। पुरानी देह सहित जो कुछ भी देखते हो, उनका भी ममत्व छोड़ो।

उत्तर सं 8- C - *आत्मा के बाप को कहा जाता है अलौकिक बाप।*

(A) *निराकार बाप को अथवा आत्मा को नहीं देखा जा सकता।* परमपिता परमात्मा प्राण दाता, जो दिव्य चक्षु विधाता है, उनको कहा जाता है ओ गॉड फादर, क्रियेटर।

(B) मुक्ति-जीवनमुक्ति के गेट्स खुलने हैं। हरी का द्वार कहते हैं ना। हरी कहा जाता है श्रीकृष्ण को, उनका द्वार है बैकुण्ठ। *बैकुण्ठ के गेट बाप आकर खोलते हैं।*

इस शरीर के बाप को कहा जाता है लौकिक बाप।

(C) *आत्मा के बाप को कहा जाता है पारलौकिक बाप। * जो सभी का एक ही है। पुकारते भी हैं ना - “ओ गॉड फादर, ओ पतित पावन, रहमदिल।" यह आत्मा ने पुकारा बाप को।

(D) सतयुग में माया होती नहीं। अभी कहते हैं - ओ गॉड फादर रहम करो। *बाप कहते हैं - रहम तो सब पर करुँगा। सब बच्चों को पापों से मुक्त करता हूँ* अर्थात् पतित दुनिया से लिबरेट करता हूँ।

उत्तर सं 9- D - *जादूगर*

राजाई के लिए तुम पढ़ रहे हो। एम ऑब्जेक्ट बुद्धि में है। नया तो कोई समझ न सके, जब तक कि कोई बैठ उनको समझावे। *एक हफ्ता बैठ समझें कि मनुष्य से देवता बनना है इसलिए बाप को जादूगर कहा जाता है।* ज्ञान रत्नों से मनुष्य को देवता बनाता हूँ।वैसे बाप को रत्नागर, सौदागर, मुसाफिर भी कहते हैं। पर मुरली महावाक्य अनुसार यहां विकल्प जादूगर ही सही है।

उत्तर सं 10- B - *अब बाप बैठ देवी-देवता धर्म का सैपलिंग लगाते हैं।*

बाप ने सैपलिंग लगाना शुरू किया है। आगे जब ब्रिटिश गवर्मेन्ट थी तो कभी अखबार में नहीं पड़ता था कि झाड़ों का सैपलिंग लगाते हैं। *अब बाप बैठ देवी-देवता धर्म का सैपलिंग लगाते हैं,* और कोई सैपलिंग नहीं लगाते। बहुत धर्म हैं, देवी-देवता धर्म प्राय: लोप है। धर्म भ्रष्ट, कर्म भ्रष्ट होने के कारण नाम ही उल्टा-सुल्टा रख दिया है।

उत्तर सं 11- A - *विनाश काल का समय है इसलिए देहधारियों से प्रीत _जोड़_ एक बाप से सच्ची प्रीत रखनी है। *

मुरली महावाक्य अनुसार विनाश काल का समय है इसलिए *देहधारियों से प्रीत तोड़_ एक बाप से सच्ची प्रीत रखनी है।* इसके अतिरिक्त अन्य विकल्प सही है। इस पुराने घर से मोह नष्ट कर देना।ज्ञान की बुलबुल बन आप समान कांटों को फूल बनाने की सेवा करनी है। याद की दौड़ लगानी है।ना है।ज्ञान

की बुलबुल बन आप समान कांटों को फूल बनाने की सेवा करनी है। याद की दौड़ लगानी है।

उत्तर सं 12- A - *पवित्रता*

ब्रह्मा बाबा शिव बाप की विशेष पसन्दगी क्या है? (पवित्रता, अन्तर्मुखता, निश्चयबुद्धि, सच्चाई-सफाई)। वास्तव में फाउण्डेशन है - *पवित्रता।* लेकिन पवित्रता की परिभाषा बहुत गुह्य है। पवित्रता जहाँ होगी वहाँ निश्चय, सच्चाई-सफ़ाई, ये सब आ जाता है। लेकिन बापदादा देखते हैं कि पवित्रता की गुह्य भाषा, पवित्रता का गुह्य रहस्य अभी बुद्धि में पूरा स्पष्ट नहीं है।

उत्तर सं 13- C - *नर्क*

मैं जो सृष्टि अथवा जमाना रचता हूँ तो क्या दु:ख देने के लिए? मैं तो रचता हूँ सुख देने के लिए। परन्तु यह ड्रामा सुख दु:ख का बना हुआ है। मनुष्य कितने दु:खी हैं। बाप समझाते हैं कि जब नया जमाना, नई सृष्टि होती है, तो उसमें सुख होता है। दु:ख पुरानी सृष्टि में होता है।...तुम नई दुनिया के

लिए, नये धर्म की स्थापना के लिए नई बातें सुनते हो - परमपिता परमात्मा से, जो सृष्टि को भी पावन बनाते हैं। तुमको भी नया बनाते हैं। *नई सृष्टि में फिर नया जमाना स्वर्ग का होगा, अभी तो नर्क का जमाना है।* तुम नर्क के जमाने में हो।

उत्तर सं 14- A - *रावण राज्य में दु:ख ही दु:ख है।*

वह लौकिक फादर तो शरीर का है, यह है आत्माओं का बाप। आत्मा बुलाती है ओ परमपिता परमात्मा। *अविनाशी बाप को याद करते ही आये हैं क्योंकि रावण राज्य में दु:ख ही दु:ख है।* जब से रावण राज्य शुरू होता है तब से याद करना शुरू होता है। याद तो बाप को ही करना है क्योंकि वर्सा बाप से ही मिलता है।

उत्तर सं 15- B - *जीवनमुक्ति से जीवनबन्ध*

नयन-हीन को राह दिखाओ प्रभु, बुद्धि ऊपर चली जाती है परमपिता तरफ। जबकि सब राज़ बताने वाला वह परमपिता परमात्मा ही है। निर्वाणधाम को मुक्तिधाम कहा जाता है।

जो-जो आत्मायें पहले आती हैं वह जीवनमुक्ति में हैं, पीछे फिर जीवनमुक्ति से जीवनबन्ध में आती हैं। बच्चे जानते हैं पवित्रता, सुख, शान्ति है ही सतयुग में, जबकि एक राज्य होता है। उसको ही अद्वेत राज्य कहा जाता है। फिर द्वेत राज्य अर्थात् डेविल का राज्य होता है।

उत्तर सं 16- A - *शान्ति*

जब भी तुम अपनी निराकार दुनिया में जाते हो तो शांत रहते हो। निर्वाण, वाणी से परे। वहाँ तुम शांत में रहते हो। शांति का धाम वो है। *तो सर्व को शांति भी देने वाला वो एक है अर्थात मनुष्यों की शान्ति- की चाहना एक बाप ही पूरी कर सकते हैं।* ये मनुष्य थोडे ही दे सकता है, जो अशांत है, पतित है और भ्रष्टाचारी है।... .जो नहीं मानने वाले होते है उसको यहाँ अलाउ ही नहीं है।